भारतीय आर्थिक परंपरा (Indian Economic Tradition)

भारत की आर्थिक परंपरा एक समृद्ध और विविधतापूर्ण इतिहास समेटे हुए है, जो प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक युग तक विस्तृत है। यह परंपरा कृषि, व्यापार, शिल्प, उद्योग, श्रम विभाजन, कर प्रणाली, और नैतिक आर्थिक विचारों का समुचित मिश्रण प्रस्तुत करती है।

---

1. प्राचीन भारतीय आर्थिक परंपरा

(i) कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था

भारत की अर्थव्यवस्था प्रारंभ से ही कृषि आधारित रही है।

सिंधु घाटी सभ्यता (2500-1750 BCE) में उन्नत कृषि तकनीकों (सिंचाई, हल चलाने की प्रणाली) का प्रयोग होता था।

वैदिक काल (1500-600 BCE) में कृषि, पशुपालन और वाणिज्य पर बल दिया गया था।

कौटिल्य (चाणक्य) के "अर्थशास्त्र" में कृषि को राज्य की स्थिरता और समृद्धि का मूल आधार माना गया।

(ii) व्यापार और वाणिज्य

भारत प्राचीन काल से ही एक व्यापारिक शक्ति रहा है।

सिंधु घाटी के लोग मेसोपोटामिया और मिस्र से व्यापार करते थे।

गुप्तकाल (4वीं-6वीं शताब्दी CE) में भारत सोने, मसालों, वस्त्रों और धातुओं का बड़ा निर्यातक था।

प्राचीन व्यापार मार्गों में सिल्क रूट (चीन से भारत और यूरोप तक) तथा स्पाइस रूट (भारत से रोम, ग्रीस, अरब तक) प्रमुख थे।

भारतीय व्यापारिक परंपरा में गुप्त व्यापार संघों (गिल्ड्स) का बड़ा योगदान था, जो आज के कॉर्पोरेट संगठनों की तरह काम करते थे।

(iii) आर्थिक विचारधारा और नीति

अर्थशास्त्र (चाणक्य):

राज्य की अर्थव्यवस्था को व्यवस्थित करने के लिए कर प्रणाली, मुद्रा, श्रम और व्यापार को नियंत्रित करने पर जोर दिया।

मनुस्मृति:

अर्थव्यवस्था में नैतिकता और धर्म का समावेश आवश्यक माना गया।

श्रेणी/गिल्ड सिस्टम:

विभिन्न शिल्पकार और व्यापारियों की अपनी गिल्ड (Guilds) होती थीं, जो श्रम विभाजन और उत्पादन का नियमन करती थीं।

---

2. मध्यकालीन भारतीय आर्थिक परंपरा

(i) कृषि और कर प्रणाली

दिल्ली सल्तनत और मुगलकाल में कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ बनी रही।

शेरशाह सूरी ने एक संगठित कर प्रणाली (रैयतवारी, जमीनदारी) लागू की।

अकबर के नवरत्न टोडरमल ने "जमीनदारी प्रणाली" और स्थायी बंदोबस्त लागू किया।

(ii) उद्योग और व्यापार

भारत कपड़ा, मसाले, धातु उत्पादों, हीरे और मोतियों का निर्यात करता था।

मुगल काल में भारत की GDP विश्व की 25% से अधिक थी।

पश्चिमी देशों (पुर्तगाल, डच, अंग्रेज, फ्रांसीसी) का आगमन भारत के व्यापारिक तंत्र में परिवर्तन लेकर आया।

बंगाल, गुजरात, मालाबार और सूरत प्रमुख व्यापारिक केंद्र थे।

---

3. औपनिवेशिक काल में भारतीय अर्थव्यवस्था

(i) भारत की आर्थिक दुर्दशा

ब्रिटिश उपनिवेशवाद के कारण भारत की पारंपरिक अर्थव्यवस्था नष्ट हो गई।

स्थायी बंदोबस्त प्रणाली (Permanent Settlement) के कारण किसान कर्ज में डूब गए।

भारत से कच्चे माल का निर्यात और ब्रिटिश उत्पादों का आयात किया जाने लगा, जिससे भारतीय कुटीर उद्योग नष्ट हो गए।

(ii) ब्रिटिश औद्योगिक नीतियाँ

19वीं शताब्दी में रेलवे, टेलीग्राफ और आधुनिक बैंकिंग प्रणाली लागू हुई, लेकिन इसका लाभ अंग्रेजों को मिला।

भारतीय किसानों को नकदी फसलों (जूट, नील, कपास) की खेती के लिए मजबूर किया गया, जिससे खाद्य उत्पादन प्रभावित हुआ।

20वीं शताब्दी में स्वदेशी आंदोलन के कारण स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा मिला।

---

4. स्वतंत्र भारत और आर्थिक परंपरा

(i) समाजवादी आर्थिक मॉडल (1947-1991)

जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था की नींव रखी गई।

पांच वर्षीय योजनाएँ (Five Year Plans) शुरू की गईं।

भारी उद्योगों (इस्पात, कोयला, बैंक) को सरकार ने अपने नियंत्रण में लिया।

हरित क्रांति (1960s) से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई।

(ii) उदारीकरण और वैश्वीकरण (1991 के बाद)

डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में नई आर्थिक नीति (New Economic Policy - 1991) लागू की गई।

निजीकरण, उदारीकरण और वैश्वीकरण (Liberalization, Privatization, Globalization - LPG) को अपनाया गया।

IT, सेवा क्षेत्र, स्टार्टअप और डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिला।

---

5. भारतीय आर्थिक परंपरा की विशेषताएँ

1. कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था – प्राचीन काल से कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की नींव रही है।

2. व्यापार और वाणिज्य का महत्व – भारत हमेशा एक व्यापारिक केंद्र रहा है।

3. गिल्ड और श्रम विभाजन – समाज में शिल्प और व्यवसाय के लिए संगठित प्रणाली थी।

4. नैतिकता और धर्म आधारित अर्थशास्त्र – अर्थशास्त्र और व्यापार में नैतिकता को महत्व दिया गया।

5. मिश्रित अर्थव्यवस्था – स्वतंत्र भारत ने समाजवाद और पूंजीवाद का मिश्रण अपनाया।

6. तकनीकी और डिजिटल विकास – आज भारत डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया जैसी योजनाओं के माध्यम से आगे बढ़ रहा है।

निष्कर्ष

भारतीय आर्थिक परंपरा प्राचीन काल से ही एक संतुलित और विकसित संरचना रही है। समय के साथ इसमें बदलाव आया, लेकिन कृषि, व्यापार, नैतिकता, और श्रम विभाजन इसके मूल तत्व रहे हैं। आधुनिक समय में वैश्वीकरण, डिजिटल अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भर भारत जैसे नए तत्व जुड़ रहे हैं, जिससे भारत फिर से एक आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है।